आईसीएआर-आईवीआरआई, मुक्तेश्वर में 'खेत बचाओ अभियान' के अंतर्गत जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-आईवीआरआई), मुक्तेश्वर द्वारा 23 अक्टूबर 2026 को 'खेत बचाओ अभियान' के अंतर्गत किसानों के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को मृदा स्वास्थ्य संरक्षण, जैविक एवं प्राकृतिक खेती, मिश्रित खेती तथा अंतरवर्तीय फसल प्रणाली के प्रति जागरूक करना और कृषि एवं संबद्ध गतिविधियों के माध्यम से उनकी आय बढ़ाने के लिए प्रेरित करना था।

कार्यक्रम के दौरान डॉ. वर्मा ने मिश्रित खेती एवं अंतरवर्तीय फसल प्रणाली विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने किसानों को खेती में विविध फसलों को अपनाने तथा उपलब्ध कृषि संसाधनों का बेहतर उपयोग करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने जैविक खेती के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि जैविक कृषि पद्धतियों को अपनाकर मृदा की उर्वरता बनाए रखने और टिकाऊ कृषि उत्पादन को बढ़ावा देने में सहायता मिल सकती है।

इस अवसर पर डॉ. मनीष तोमर ने प्राकृतिक एवं जैविक खेती के माध्यम से मृदा संरक्षण विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने किसानों को मिट्टी के स्वास्थ्य एवं उर्वरता को बनाए रखने, जैविक खादों के उपयोग तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण पर विशेष ध्यान देने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि स्वस्थ मिट्टी टिकाऊ कृषि उत्पादन का आधार है और इसके संरक्षण के लिए किसानों को पर्यावरण-अनुकूल कृषि पद्धतियाँ अपनानी चाहिए।

डॉ. मनीष तोमर ने किसानों को कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में उद्यमिता की संभावनाओं के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने कृषि के साथ पशुपालन, मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन तथा अन्य स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल उद्यमों को अपनाकर आय के अतिरिक्त स्रोत विकसित करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक कृषि तकनीकों और उद्यमशीलता के समन्वय से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ाए जा सकते हैं तथा किसानों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया जा सकता है।

कार्यक्रम के माध्यम से किसानों को मृदा स्वास्थ्य संरक्षण, टिकाऊ कृषि पद्धतियों और कृषि आधारित उद्यमिता के महत्व के प्रति जागरूक किया गया। 'खेत बचाओ अभियान' का उद्देश्य मृदा

संसाधनों के संरक्षण तथा पर्यावरण-अनुकूल कृषि पद्धतियों को प्रोत्साहित कर कृषि को अधिक टिकाऊ एवं लाभकारी बनाने की दिशा में जागरूकता बढ़ाना है।